राजा और माली

राजा और माली

एक भारतीय लोककथा

बहुत समय पहले, एक सुनहरे महल में एक युवा राजा रहता था. उसके कई सलाहकार थे. उनका काम राजा को नई चीजें सिखाना और शासन करने में उसकी मदद करना था.

प्रत्येक सलाहकार वही करना चाहता था जो राजा को सबसे अच्छा लगता था. इसलिए वे उसे सिखाने के बजाए, पूरे दिन राजा की चापलूसी करते रहते थे.

जब राजा, हिसाब-किताब में गलती करता तो कोई भी उसे नहीं सुधारता था. उसकी जगह सभी सलाहकार बस हाँ-में-हाँ मिलाते और मुस्कुराते थे. "ओह!" वो राजा की प्रशंसा में कहते, "एक पुरानी समस्या का नया हल!"

जब राजा ने तीरंदाजी का अभ्यास किया, तो कई बार उसके तीर निशाने से चूके. फिर भी सलाहकार राजा के निशाने की तारीफ के पुल बांधते, "क्या ताकत है! क्या सटीक निशाना है!"

और जब राजा ने शतरंज खेलता, तो सलाहकार सुनिश्चित करते कि राजा हर खेल जीते.

यहां तक कि सबसे कुशल खिलाड़ियों में भी यह दिखाने की हिम्मत नहीं थी कि वे राजा से बेहतर खेल सकते थे.

"क्या चतुर चाल है!" सलाहकार सराहना करते. "हमारे राजा कभी गलती नहीं करते!"

अचानक, राजा ने कुछ आवाजें सुनीं.
उन्हें सुनने के लिए वो एक पेड़ के पीछे छिप गए.
"फिर से कोशिश करो, बेटी," एक आदमी ने कहा.
"तुम चाहो को किसी अन्य मोहरे को चल सकती हो?"
"आपको यह कैसे पता, पिता जी?" छोटी लड़की ने पूछा.
राजा पेड़ के पीछे से झांककर यह नज़ारा देख रहे थे.
वह आदमी अपनी छोटी लड़की को शतरंज खेलना सिखा रहा था.
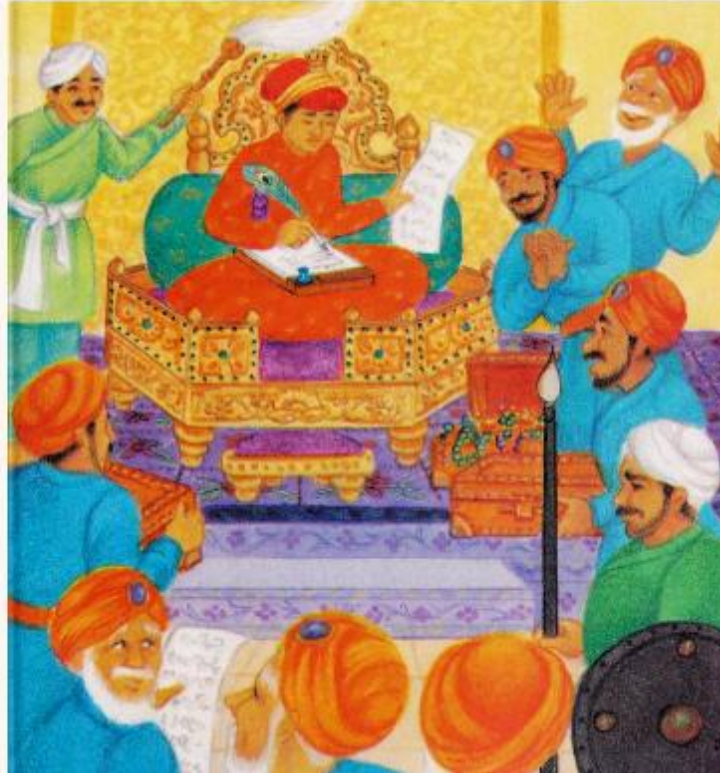
लेकिन राजा तारीफ सुनने के अलावा कुछ और नहीं सुनता था. "क्या यह वास्तव में सच है कि मैं कभी गलती नहीं करता?" उन्होंने एक दिन खुद से पूछा. एक सुबह वो अपने बगीचे में टहलने गए. वहां उन्होंने हर रंग के फूलों को खिलते देखा. उन्होंने पेड़ों में पके फलों को लटकते देखा, और साथ में मोर को गर्व से नाचते हुए भी देखा. "ऐसी खूबसूरत जगह में तो मुझे खुश होना चाहिए. लेकिन वैसा नहीं हुआ!" उन्होंने एक आह भरी. "मुझे अब कोई चुनौती चाहिए."

"कितने आश्चर्य की बात है!" राजा ने सोचा. "यह आदमी मेरा माली है, लेकिन वो शतरंज का बेहतरीन खिलाड़ी भी है. यहां तक कि उसकी छोटी लड़की भी मेरे अधिकांश सलाहकारों से बेहतर खेलती है."

फिर राजा बाहर निकले और उन्होंने माली को शतरंज के एक खेल खेलने की चुनौती दी.

माली झुका और मुस्कुराया. "मुझे आपके साथ खेलने में खुशी होगी महाराज," उसने कहा. "यह मेरी बेटी है. सुबह बगीचे में अपना काम शुरू करने से पहले हम दोनों कुछ देर शतरंज खेलते हैं."

"मेरे पिता बहुत बुद्धिमान हैं," छोटी लड़की ने शर्माते हुए कहा. "वो दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ी हैं."

राजा ने लड़की का सिर थपथपाया. "मुझे यकीन है कि तुम्हारे पिता एक अच्छे आदमी हैं," राजा ने कहा. "लेकिन शतरंज में वो मुझे हरा नहीं सकते!"

राजा और माली ने तीन खेल खेले. राजा को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब माली हर बाज़ी जीता!

"माली तुम्हारा धन्यवाद!" राजा ने मुस्कराते हुए कहा. "आज एक लंबे समय बाद मुझे बड़ा मज़ा आया है."

फिर राजा ने कहा, "मुझे अभी अपने सलाहकारों के साथ जाकर मिलना है. लेकिन कल सुबह हम फिर से शतरंज खेलेंगे."

"हाँ, महामहिम," माली ने जवाब दिया. "आप जब आज्ञा देंगे मैं तभी खेलने के लिए हाज़िर होऊंगा. मुझे जो कुछ आता है उस सब को सिखाने में भी मुझे बड़ी खुशी होगी."

फिर राजा सीटी बजाता हुआ अपने महल में वापस गया.

उन्हें देखते ही सलाहकारों ने खाना बंद कर दिया. "ओह, महामहिम!" उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा. "हमें आपकी बहुत याद आई! आज हमारे गले से खाना तक नहीं उतर रहा है!"

"सभी को सुप्रभात!" राजा ने खुशी से कहा.

"अच्छा बताओ, आज सुबह क्या हुआ?"

"कुछ बढ़िया ही हुआ होगा?" एक सलाहकार ने अनुमान लगाया.

"क्या कुछ नाचने वाले हाथी आ गए?"

"क्या किसी अन्य राजा ने आपको कोई बेशकीमती तोहफा भेजा? क्या आप हमें उसे दिखाएंगे?" दूसरे सलाहकार ने अनुमान लगाया.

"नहीं!" राजा हँसा. "मुझे आखिरकार कोई ऐसा शख्स मिला जो मुझे शतरंज में हरा सकता था! वह मुझे सब कुछ सिखाने को भी तैयार है!"

"ओह!" सलाहकारों ने चिंता जताते हुए कहा.

फिर जब राजा खाने लगा तब सलाहकार एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाने लगे.
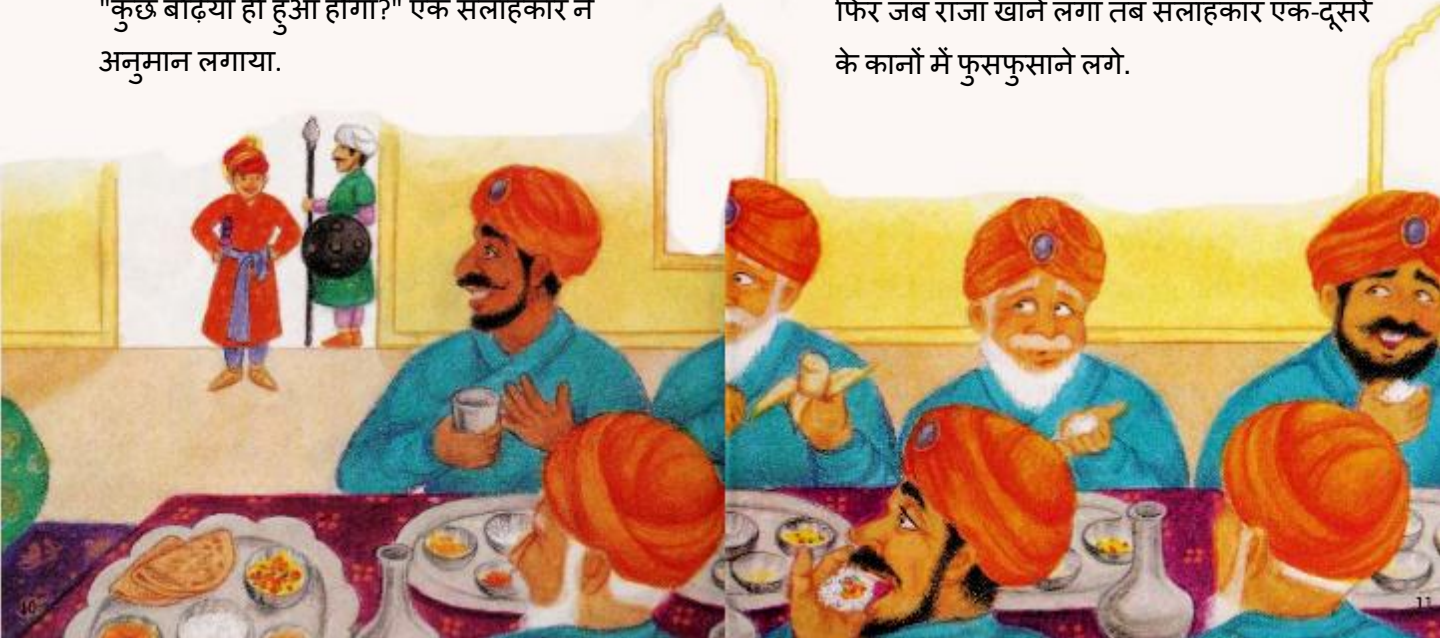
बाद में, एक सलाहकार ने कहा, "महाराज आपने उस माली को जीतने दिया, यह आपका बड़प्पन दर्शाता है!" राजा ने कहा, "नहीं, माली इसलिए जीता क्योंकि वो मुझ से बेहतर खिलाड़ी है."

" नहीं, महाराज! यह संभव नहीं है!" दूसरे सलाहकार ने कहा. "माली ने कहीं कुछ धोखा-धड़ी की होगी."

"वह माली बड़ा झूठा है!" सभी सलाहकारों ने एक-साथ कहा. "उसे सजा मिलनी चाहिए!" उन्होंने राजा को बहुत समझाया और उन्हें लगा जैसे अंत में राजा ने उनकी बात मान ली हो.

अगली सुबह, राजा बगीचे में माली से मिला. इस बार सलाहकार भी उनके साथ आए. राजा और माली एक के बाद एक खेल खेलते रहे और सलाहकार उन्हें चुपचाप देखते रहे.

माली फिर से जीता और राजा मुस्कुराया.

सलाहकार एक-दूसरे से फुसफुसाए. "हमारा क्या होगा अगर राजा ने तय किया कि यह माली हमसे कहीं अधिक चतुर है? हमें कुछ करना होगा!"

उस रात, माली को महल में बुलवाया गया.
राजा ने कहा, "माली, किसी ने आजतक मुझ से बेहतर शतरंज नहीं खेला है. मेरे सलाहकारों को लगता है कि तुमने खेल में मुझे कुछ धोखा दिया है."
"कोई भी हमारे राजा को बेवकूफ नहीं बना सकता!" सलाहकारों ने जोड़ा.

"महामहिम, आप गलती कर रहे हैं. मैं भला आपको क्यों धोखा दूंगा?" माली ने धीरे से कहा. "मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ खेल इसलिए खेला क्योंकि मैं चाहता था कि आप कुछ सीखें."
राजा ने दुखी मन से उत्तर दिया, "मैं कभी गलती नहीं करता हूँ. मेरे सलाहकारों के अनुसार मैं हमेशा सही करता हूं. इसलिए अब तुम्हें जेल जाना होगा."
उस रात राजा सो नहीं सका. "क्या माली को सच में जेल जाना चाहिए? या फिर मैंने कोई गलती की है? फिर उसकी बेटी का क्या होगा?" उसने खुद से पूछा.
राजा ने माली की बेटी को महल में बुलवाया. "तुम्हारे पिता कुछ दिनों के लिए बाहर जायेंगे," राजा ने उससे कहा. "तब तक तुम यहाँ महल में ही रहोगी."

कुछ दिनों बाद, राजा माली की बेटी को उसके पिता से मिलवाने ले गए. लड़की पिता के लिए बगीचे से कुछ पके फल एक टोकरी में ले गई.

राजा के सलाहकार भी उसके साथ-साथ गए.

"हम आपकी रक्षा के लिए वहां रहेंगे," उन्होंने कहा. "क्या पता कि माली आप से क्या कहे या कुछ करे?"

जबकि माली की बेटी अपने पिता से बात करने गई तब राजा और सलाहकार जेल की कोठरी के बाहर इंतजार करते रहे.

उसके बाद माली ने राजा को बुलाया. "मेरी बेटी की देखभाल करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद," उसने कहा. "मेरे पास आपके लिए एक विशेष उपहार है." फिर माली ने अपना हाथ खोला, और राजा को एक आड़ू का एक बीज दिखाया.

बीज को देखकर सलाहकारों की आंखें लालच से चमक उठीं. उनमें से एक ने बीज को अपने हाथ में लेना चाहा. "हम इसे राजा के लिए बोयेंगे," उसने कहा. "फिर पकने पर हम आड़ू के फल तोड़ेंगे."
लेकिन माली ने बीज को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया. "हाँ, बस एक और बात है," उसने समझाते हुए कहा. "किसी विशेष व्यक्ति को ही इस बीज को बोना होगा. और वो ऐसा व्यक्ति हो जिसने कभी कोई गलती नहीं की हो, नहीं तो यह जादू काम नहीं करेगा."
यह सुनकर सलाहकारों के चेहरे पीले पड़ गये. "हमें अभी-अभी याद आया. हम इस बीज को नहीं बो पाएंगे. हमारे पास अभी बहुत कुछ करने को है."

"यह एक जादुई बीज है," माली ने कहा. "सिर्फ एक रात में, यह बीज एक पेड़ के रूप में विकसित होगा और पेड़ पर उगने वाला हरेक आड़ू शुद्ध सोने का होगा."

फिर माली ने वो बीज को राजा को सौंप दिया.
"महामहिम, क्या आप इसे लगाएंगे?"
एक सलाहकार ने बीज को कस कर पकड़ा. "राजा अपने हाथों को गंदा नहीं कर सकते हैं!" उसने कहा. "इसके अलावा, हमारे राजा के पास पहले से ही बहुत सारा सोना है."
फिर माली की बेटी ने सलाहकारों की ओर इशारा किया. "कृपा बहाने बनाना बंद करें!" वह चिल्लाई. "आप अच्छी जानते हैं कि राजा भी गलतियाँ करता है. मेरे पिता को जेल में डालकर राजा ने एक बड़ी गलती की है!"

उसके बाद राजा ने छोटी लड़की का हाथ अपने हाथ में ले लिया. "तुमने बिल्कुल सही कहा, बेटी," राजा ने स्वीकार किया. "मैंने कई गलतियाँ की हैं. उनमें से तुम्हारे पिता को जेल में डालना भी एक गलती है. मैं तुम्हारे पिता को आज़ाद करूंगा."
"लेकिन मेरी सबसे बड़ी गलती इन मूर्ख सलाहकारों पर भरोसा करना थी," राजा ने हंसते हुए कहा. "उस आड़ू के बीज में कोई जादू नहीं था. माली सिर्फ यह दिखाने के लिए उसका इस्तेमाल कर रहा था कि हर इंसान कोई-न-कोई गलती करता है."
"कल से?" राजा ने अपने सलाहकारों से कहा, "आप सभी लोग शाही अस्तबल में काम करेंगे. आप हाथियों को नहलाने का काम करेंगे. अब मैं कुछ नए सलाहकार नियुक्त करूंगा."
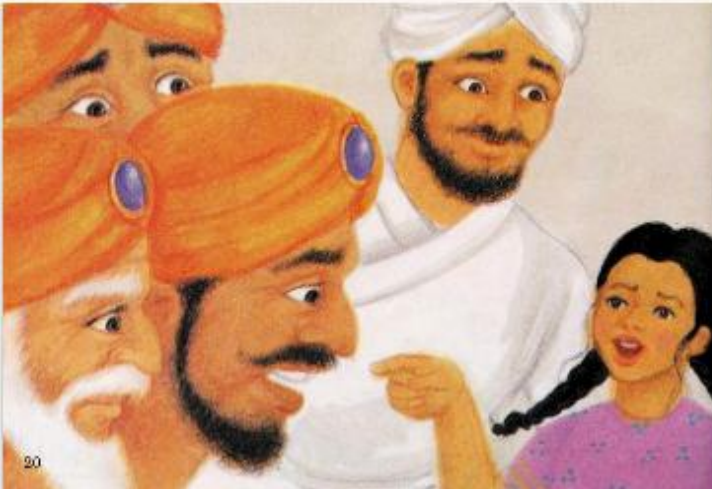
उस दिन से, वो राजा हमेशा खुश रहा.
वो हर सुबह बगीचे में शतरंज खेलता था.
कभी-कभी वह जीतता भी था.
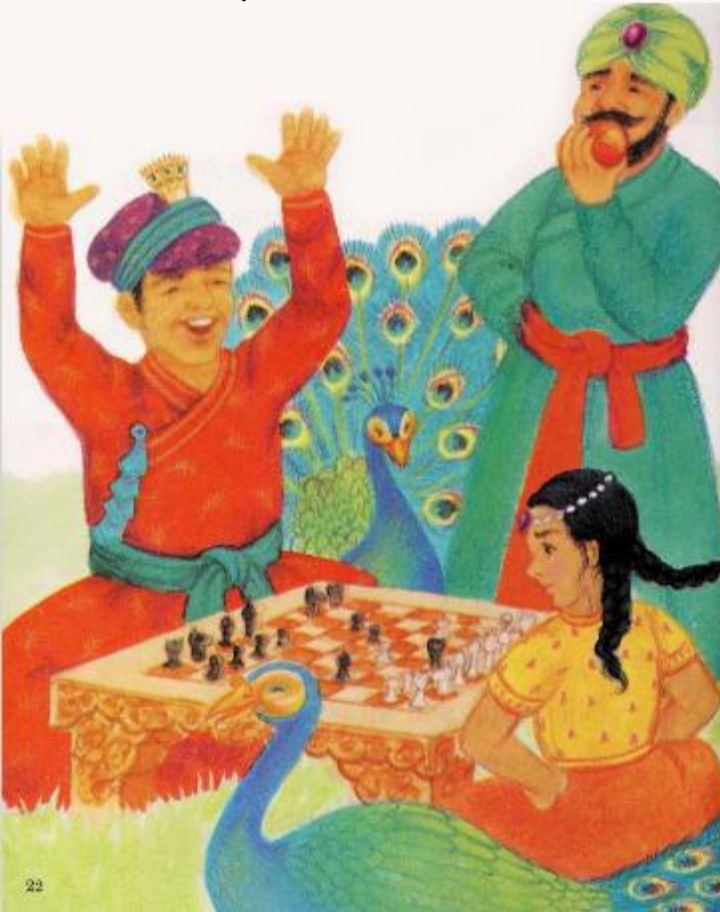
राजा ने भी अपने लोगों की मदद करने की पूरी कोशिश की.
कभी-कभी उसने गलतियाँ भी कीं. लेकिन जब कभी उसने गलतियां कीं उसने अपने नए सलाहकारों - माली उसकी की बेटी की मदद से उन्हें सुधारा भी.

समाप्त